ISBN: 978-81-974990-9-8

8. कोविड–19 का तकनीकी पर प्रभाव और नवीन अवसर

श्रीमती वाणी मसीह

व्याख्याता,
शा.उ. मा. वि. बारसूर, दंतेवाड़ा, छत्तीसगढ़.

सारांश–

विश्व कोविड–19 के समय कोरोना वायरस के डर, स्वयं के बचाव, अपने परिवार, अपनों के बचाव की अभूतपूर्व शारीरिक, मानसिक चुनौतियों से गुजररहाथा, जिसने इस विश्वभर में सभी के जीवन शैली व्यवहार को प्रभावित किया है। सभी अपने घरों से अपने कार्यों को करने के लिए नए से नई तकनीक का उपयोग करना सीख रहे थे।

विभिन्न नई–नई तकनीक के द्वारा अपनी नौकरियों की जिम्मेदारी को निभाने के लिए ऑनलाइन मीटिंग्स, ऑनलाइन वर्क, ऑनलाइन कक्षाएं आदि के द्वारा अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे थे। बहुतलोगों के लिए यह नवीन अवसर था नवीन तकनीकी को जानने का जिन्होंने कभी ऑनलाइन मोबाइल, कंप्यूटर, टीवी आदि विभिन्न विज्ञान के तकनीकी का उपयोग कभी भी नहीं किया था उन्होंने भी बहुत कुछ सीखा जिसे हम आपदा में अवसर भी कह सकते हैं कि इस आपदा की घड़ी में लोगों ने नई तकनीक का उपयोग करना सीखा। किसी ने मजबूरी में और किसी ने नया सीखने की खुशी से अपने कार्यों को पूर्ण करने के लिए इस अवसर का लाभ उठाया। प्रस्तुत लेख भारतीय आबादी के बीच जीवनशैली व्यवहार पर महामारी कोविड–19 के प्रभाव एवं तकनीकी पर प्रभाव और नवीन अवसर को संक्षेप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है।

मुख्य शब्द–तकनीकी का प्रभाव, जीवन शैली में तकनीकी, नए अवसर

तकनीकी(टेक्नोलॉजी) का अर्थ तकनीकी शब्द का अर्थ है "वैज्ञानिक ज्ञान और कौशल का उपयोग करके वस्तुओं और प्रणालियों को बनाने और उपयोग करने की प्रक्रिया"।

यह एक व्यापक शब्द है जो विज्ञान, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी और गणित (STEM) के सभी पहलुओं को शामिल करता है। तकनीकी शब्द का उपयोग अक्सर निम्नलिखित तरीकों से किया जाता है

- किसी विशेष क्षेत्र या उद्योग में उपयोग की जानेवाली तकनी कों औरप्रक्रियाओं का वर्णन करने के लिए
- किसी उपकरण या मशीन के कामकरने के तरीके का वर्णनकरने के लिए
- किसी वैज्ञानिक या इंजीनियरिंग समस्या को हल करने के लिए उपयोग किए जानेवाले तरीकों का वर्णन करने के लिए

कॉविड–19 के समय हम तकनी की के प्रभाव के उच्चतम स्तर को सीख पाए एवं देख पाए। जीवन के हर क्षेत्र में तकनी की का उपयोग करते हुए लोग अपने कार्यों को संपन्न कर रहे थे।

चाहे वह शिक्षा हो, चाहे वह पर्यटन हो, चाहे वह भोजन हो चाहे वह स्वस्थ हो, सरकारी,निजी और स्वयंसेवी संगठन कारपोरेट जगत, घर से कार्य आदि में हम तकनीकी के नए–नए एप्स का उपयोग एवं प्रभावको देख पार हे थे।

मनुष्य के जीवन का ऐसा ही एक क्षेत्र शिक्षा है जिसमें तकनीक, विज्ञान एवं इंटरनेट की पकड़ बढ़ती ही जा रही है। बीतेकुछ समय में ऑनलाइन शिक्षा का विस्तार हुआ है। इंटरनेट की पकड़ से कोई भी देश छूटा नहीं है साथ ही मनुष्य के जीवन के हर क्षेत्र में लगभग इसकी उपलब्धता महसूस की जा सकती है।कोविड–19 महामारी के दौरान शायद ही कोई ऐसा शिक्षक एवं विद्यार्थी वर्ग रहा हो जो ऑनलाइन शिक्षा पर निर्भरना रहा हो। भारत की नई शिक्षा नीति भी ऑनलाइनशिक्षा के विकास एवं विस्तारपर ध्यान केंद्रित करती है। भारत वर्ष की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक एवं उच्चशिक्षा का विकास करना है साथ ही तकनीकी एवं वैज्ञानिक शिक्षा को बढ़ावा देना, ऑनलाइन–शिक्षा का विकास एवं विस्तार करना, आदिहै। कोरोना वायरस महामारी के कारण विकास के सभी क्षेत्र प्रभावितहुए

है, लेकिन यदि बात शिक्षा जगत की जाए तो यह गम्भीर रूप से प्रभावित हुआ है। लॉकडाउन के कारण छात्रों के जीवन में कई परिवर्तन आये, महामारी के दौरान लगभग 32 करोड़ छात्रों का स्कूल, कालेज छूट गये तथा वे शिक्षण गतिविधियों से दूरहो गये। छात्रों के भविष्य व शिक्षा के महत्वको देखते हुए ऑनलाइन शिक्षा का प्रारंभ किया गया, जो कि शिक्षा में निरन्तरता बनाये रखने हेतु अच्छा विकल्प है, ऐसा नहीं है कि महामारी से पूर्व हम ऑनलाइन शिक्षा से अवगत नहीं थे उससे पहले भी छात्र व शिक्षण संस्थान पठन–पाठन हेतु इस माध्यम का सहारा लेते थे लेकिन यह वैकल्पि कथा कि छात्र व शिक्षणसंस्था न किस माध्यम से पढ़ना व पढ़ाना चाहते है, लेकिन महामारी ने इस विकल्प को हर छात्र व शिक्षणसंस्थानहेतुआवश्यक बना दिया और लॉकडाउन के समय यह शिक्षा जगत के लिए अंधेरे में रोशनी के रूप में सामने आया, जिसने शिक्षण संस्थानों को मार्ग दिखाया कि उन्हें किस दिशा में जाना है। कोरोना वायरस (COVID–19) का मानव जीवन पर कई महत्वपूर्ण और व्यापक प्रभाव पड़ा है।

इनमें से कुछप्रमुख प्रभावनिम्नलिखितहैंः

आर्थिकप्रभावः कई लोगों ने अपनी नौकरियां खो दीं, कंपनियों ने अपने कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया, छोटे छोटे व्यवसाय बंद हो गए, और वैश्विक अर्थव्यवस्था मंदीमें चली गई। छोटे व्यापारियों और कामगारों को इस परिस्थिति में विशेष रूप से कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

सामाजिक जीवनः लोगों के सामाजिक जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा, सभी अपने घरोंमें बंद हो गए थे किसी भी पारिवारिक आयोजन आदि में भी लोग एक दूसरे के घर नहीं जा पा रहे थे। सामाजिकदूरीऔरलॉकडाउन के कारण सामाजिक समारोह, उत्सव, और धार्मिक आयोजन सीमित हो गए। इससे लोगों के सामाजिक जीवन और रिश्तों पर अत्यन्त प्रभाव पड़ा।

पर्यावरणः लॉकडाउन के दौरान औद्योगिक गतिविधियों और लोगों के घरों में रहने कें कर आवागमन पूर्णतः बन्द था और परिवहन में कमी के कारण प्रदूषण के स्तर में कमी आई, जिससे पर्यावरण को अस्थायी रूप से लाभ हुआ।

स्वास्थ्यः पूरे विश्वमें कोराना वायरस ने हाहाकार मचा कर रख दिया था लाखों लोग संक्रमित हुए, और हजारों लोगों की मृत्यु हुई। स्वास्थ्य प्रणालियों पर भारी दबाव पड़ा, और संसाधनों की भारी कमी हुई। लोग ऑक्सीजन के लिए, हॉस्पिटल में बिस्तर के लिए, सुविधा के लिए, इलाज के लिए भटकते रह गए थे।

मानसिकस्वास्थ्यः लॉकडाउन, नौकरी खोजाने ॱ डर, आर्थिकस्थिति, अपने लोगों को खोदेने का भय सामाजिक दूरी, और अनिश्चितता ने मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं जैसे अवसाद, चिंता, और अकेलेपनको बढ़ावा दिया।

वैज्ञानिकअनुसंधानः विज्ञान ने अपना पूरा जोर लगा दिया, वैज्ञानि कों ने अपने भरपुर कोशिशों से वैक्सीन मेडिसिन बनाने की लगातार को शिशजारी रखीजिस से कोरोना के इलाज हेतु मेडिसिन, वैक्सीन जल्द से जल्द तैयार किया जा सके। कोरोना वैक्सीन और दवाओं के विकास में तेजी आई, जिससे भविष्य मेंअन्य बीमारियों के इलाज में भी संभावनाएं बढ़ी हैं।

प्रौद्योगिकी और नवाचारः घरों से प्रत्येक व्यक्ति तकनीकी का प्रयोग करते हुए अपने हर कार्य को करने की कोशिश कर रहा था जिससे नई तकनी की का और कई नवाचारों का जन्म हुआ।

डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग तेजी से बढ़ा। वर्कफ्रॉमहोम, ऑनलाइन शॉपिंग, और टेलीमेडिसिन जैसी सुविधाओं का व्यापक उपयोग हुआ।

कोविड काल और ऑनलाइन शिक्षा

ऑनलाइन शिक्षा का अर्थ

ऑनलाइन शिक्षा वह होती है जो इंटरनेट के माध्यम से एवं तकनी की संसाधनों की सहायता से प्राप्त एवं प्रदान की जाती है ऑनलाइन–शिक्षा कोई–लर्निंग, डिजिटल–शिक्षा आदि के नाम से भी जाना जाता है। ऑनलाइन शिक्षा (ई–लर्निंग) का वर्णन डिजिटल तकनीक का उपयोग करके प्रदान की जानेवाली शिक्षाशास्त्र के किसी भी रूपमें जाना जाता है।

इस तरह के तरीकों में दृश्य, ग्राफिक्स, टेक्स्ट, एनिमेशन, वीडियो और ऑडियो शामिल होते हैं। इसके अलावा, ऑनलाइन शिक्षाशास्त्र समूह में सीखने और विशिष्ट क्षेत्रों में प्रशिक्षकों की सहायता की सुविधा भी प्रदानकर सकता है।

ऑनलाइन शिक्षण से तात्पर्य उस निर्देश से है जो विभिन्न मल्टीमीडिया, इंटरनेट प्लेटफार्मों और अनुप्रयोगों के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक रूप से वितरित किया जाता है। ऑनलाइन शिक्षण

को शिक्ष कों और विद्यार्थियों के बीच एक शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है जिस में विभिन्न डिजिटल माध्यम शामिल हैं जैसेः श्व्हाट्सएपश, 'जुम', श्गूगल क्लासरूमश, आदि। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा कक्षाओं को ऑनलाइन तरीके से विषयवार शिक्षकों ने अलग–अलग समय पर अपने पाठ्यक्रम को रोचक पूर्णऑनलाइन पीपीटी, एनीमेशन वीडियो, ग्राफिक्स आदि के द्वारा बच्चों को सिखाया एवं पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाने बच्चों के सीखने सिखाने की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहे और बच्चों में लर्निंग लॉस कम से कम हो फिर भी छत्तीसगढ़ के कुछ सुदूर आदिवासी क्षेत्र ऐसे थे जहांपर इंटरनेट की सुविधा, मोबाइल फोन की सुविधा न होने के कारण बहुत से बच्चे कक्षाओं से वंचित रह गए और अपने पाठ्यक्रम में पीछे रह गए जिससे कि उनकी सीखने की गतिमंद एवं पूर्ण तया बंद हो गई। जिससे बच्चे अपने कक्षा स्तर के दक्षताओं को प्राप्त नहीं कर पाए।

कोविड 19 और बच्चों एवं शिक्षकों में तकनी की के उपयोग के नवीन अवसर

कोरोना वायरस महामारी के कारण जीवन के सभी क्षेत्र प्रभावित हुए चाहे वो आर्थिक हो, सामाजिक या फिर शिक्षा जगत। महामारी के कारण सभी स्कूल, कालेज, पार्क, रेस्टोरेन्ट, होटल, सिनेमाघर बंद कर दिये गये, जिन्दगी चार दिवारी के मध्य सिमट कर रह गयी।

शिक्षण संस्थानों के बंद हो जाने के कारण शिक्षण प्रक्रिया गंभीर रूप से प्रभावित हुई जो छात्र हर रोज विद्यालय जाकर कुछ नया सीख तेथे, अपने भविष्य को लेकर सपने देखते थे व उन्हें पूरा करने हेतु प्रयास करते थे लॉकडाउन के कारण वे घर के चार दिवारी में बंद हो गये वअपनेपढ़ाईसपने व भविष्य को लेकर चितित होने लगे, यह चिंता व तनाव केवल बच्चों तक ही नहीं था वरन अभिभाव कभी उनके भविष्य को लेकर तनावमें रहने लगे. छात्रों के भविष्य व उसके प्रति उनकी एव उनके अभिभावकों के चिंता व तनावको देखते हुए सरकार ने सभी शिक्षण संस्थानों से शिक्षा को आनलाइन विधि से संचालित करने की अपील की जिससे न केवल बच्चों की शिक्षा को लेकर तनाय दूर हुआ बल्कि लॉकडाउन में भी शिक्षा में निरन्तरता बनी रही।

छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा विभागद्वारा पढ़ईतुहर द्वार योजना आरंभ किया गया जिस के तहत कक्षाएं शिक्षक ऑनलाइन तरीके से प्रतिदिन लेने लगे। कोरोना वायरस महामारी के कारण लॉकडाउन के दौरान सभी शिक्षणसंस्थानों ने शिक्षा प्रदान करने के लिए पारम्परिक विधिको छोड़कर आनलाइन विधि का सहारा लिया जिस के लिए शिक्षक य छात्र दोनों ने हीतकनीक को सीखा।

कॉविड–19 के कारण जब ऑनलाइन कक्षाएंचल रही थी तो ऐसे बहुत सी शिक्षक थे जो मोबाइल पर कक्षाओं का संचालन नहीं कर पाते थे लेकिन धीरे–धीरे उन्होंने कक्षाओं का संचालन करना सीखा। बहुत से बच्चे ऑनलाइन कक्षा ओं में किस प्रकार अटेंड करना है नहीं जानते थे धीरे–धीरे उन्होंने भी तकनीक को सिखा।

शिक्षकों ने ऑनलाइन कक्षा ओं में पीपीटी, वीडियो का प्रयोग कर पाठ्यक्रम को बच्चों के लिए रुचिपूर्ण बनाना सिखा और भी कई नए–नए तकनीकी का उपयोगकिया, नए एजुकेशन एप्स का उपयोगकर बच्चों के एग्जाम्स बच्चों के पेपरबच्चों के कविता, निबंध, भाषण, वेबिनार आदि प्रतियोगिता ओं का आयोजन किया एवंतकनी की के प्रयोग से ही बच्चों को मोटिवेट करने हेतु प्रमाणपत्र बनाना भी सीखा। बच्चों में ऑनलाइन विभिन्न प्रतियोगिताओं का संचालन करना, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म में ही देश–विदेश के विशेषज्ञों से मानसिकस्वास्थ्य, पढ़ाई किस प्रकार की जाए समय का उपयोग, तकनीकी का उपयोग आदि विभिन्न विषयों पर ऑनलाइन कार्यशालाओं का आयोजन, वेबिनार का आयोजन किया गया। इस प्रकार कोविद–19 शिक्षकों एवं छात्रों के लिए तकनीकी के नए अवसर लेकर आया। जिसे समय की मांग समझकर हर छात्र एवं शिक्षक ने सीखा।

प्रौद्योगिकी ने छात्रों और उनके शिक्षकों के बीच दूरस्थ शिक्षा में सुधार किया है। कोरोना वायरस से संक्रमित रोगियों की बढ़ती संख्या के कारण, कई देशों ने कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने में मदद करने के लिए संस्थानों ने शिक्षण कक्षाओं को बंद करने का आदेश जारी किया। कई संस्थानों ने यह सुनिश्चित करने के लिए कि किसी भी उपायों से शिक्षा बाधित न हो, Google या Zoom जैसे ऑन लाइनप्लेट फ़ॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन कक्षाएं देना शुरू कर दिया। दूरस्थ शिक्षा में लागू की गई तकनीक वही है जिसका उपयोग प्रभावी दूरस्थकार्य को बढ़ाने के लिए किया जाता है।

इस नई ऑनलाइन तकनी कमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता–सक्षम रोबोट शिक्षकों का उपयोग भी शामिल है। दूरस्थ शिक्षा मेंलगेछात्र कई इंटरनेट–आधारित तकनी कों में कुशल हो रहे हैं। इसी प्रकार शिक्षा के साथ ही साथ विभिन्न विभाग भी ऑनलाइन अपने कार्यक्रमों का संचालन कर रहे थे।

महामारी के दौरान प्रोद्योगिकीद्वारा उत्पन्न चुनौतियाँ

हालाँकि सोशल मीडिया और इंटरनेट–आधारित प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से स्वस्थ और रोगग्रस्त दोनों आबादी के लिए प्रौद्योगिकी–आधारित गतिविधिद्वारा प्रदान किए जाने वाले विभिन्न अवसर हैं, लेकिन ऐसी चुनौतियाँ और खतरे भी हैं जो निरंतर ऑनलाइन और प्रौद्योगि की के नए गैजेट्स के उपयोग से किसी व्यक्ति के लिए उत्पन्न करते हैं।

प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं और जीवन शैली को बढ़ावा देने की सुविधा सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी का भरपूर उपयोग हो सकता है। इसके विपरीत, किसी व्यक्तिपर इन प्रौद्योगिकियोंद्वारा मॉडल किए गए खतरों और ब्टप्क युग के दौरान इस तरह की तकनीकी प्रगति का चयन करने के लिए सलाह या दिशा निर्देशों की आवश्यकता को समझना भी महत्वपूर्ण है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि ये प्रौद्योगिकि यों स्वास्थ्य संबंधीअसमानताओंको कम करने, वायरसफैलने के जोखिमको कम करने और संकट के दौरान सार्वजनिक सेवा ओं तक पहुँच को आसान बनाने में मदद करने का एक वैकल्पिक साधन मात्र हैं।

1. स्क्रीनपर अधिक समय बिताने का मानव मस्तिष्क मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

कोविड–19 के समय से, प्रतिबंधित जीवन शैली के कारण मोबाइल, कंप्यूटर और टेली विज़न जैसी स्क्रीन पर बिताया जानेवाला समय काफी बढ़ गया है।

एक अध्ययन में पाया गया कि स्क्रीन पर बिताए जानेवाले समय की अवधि (6 घंटे/दिन) 20-65 वर्ष की आयु वाले लोगों में अवसाद के माध्यम या गंभीर बीमारी से जुड़ाहै। यह भी सुझाव दिया जाता है कि कार्यस्थल पर बैठे रहना, अवसाद का पारिवारिक इतिहास और सामाजिक संबंध भी अवसाद के स्तर को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

विश्वस्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के एक अन्य शोध में भविष्यवाणी की गई है कि वर्ष 2020 तक अवसाद सहित मानसिक स्वास्थ्य के मुद्देदुनियाभर के किशोरों में मृत्युदर और रुग्णता में काफी वृद्धि करेंगे । इसके पीछे एक बड़ा कारण सभी आयुवर्ग के बच्चोंद्वारा बिताए जानेवाले स्क्रीन टाइम के घंटे में वृद्धि हो सकती है। हम ब्टप्क 19 के समय में समस्या की गंभीरता को समझ सकते हैं जहां दुनिया भर में शिक्षा प्रणाली ऑनलाइन हो गई है, जिस से सभी समूहों की आबादी के बीच स्क्रीन टाइम का खतरा और बढ़ गया है।

इसलिए, संगठनों को विभिन्न आयु समूहों के लिए दिशा–निर्देशजारी करने की आवश्यकता है कि वे स्क्रीन के संपर्क में बढ़ते समय का प्रबंधन कैसे करें, ताकि इलेक्ट्रॉनिक–आधारित गैजेट्स और उपकरणों के दुष्प्रभावों का मुकाबला किया जासके, जिनका उपयोग आज शैक्षिक और अन्य व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए अनियंत्रित तरीके से किया जाताहै।

2. प्रौद्योगिकी ने ऑनलाइन शॉपिंग और रोबोटिक डिलीवरी को बेहतर बना दिया है।

दुनिया में COVID- 19 के प्रकोप के बाद, व्यवसाय को बढ़ावा देने और इसे जारी रखने में सक्षम बनाने के लिए तकनीकी उन्नति का उपयोग किया गयाहै।

COVID-19 ने ऑनलाइन शॉपिंग को कभी–कभार होनेवाली से वैश्विक स्तरपर जरूरी बना दिया है ताकि लोगों की आवाजाही कम से कम हो सके और इस प्रकार कोरोना वायरस को नियंत्रित किया जा सके।

ऑनलाइन शॉपिंग को मजबूत लॉजिस्टिक्स सिस्टम के माध्यम से बढ़ाया गया है जहां रोबोट का उपयोग खाद्य आपूर्ति और अन्य वस्तुओं को पहुंचाने के साधन के रूपमेंकिया जा रहा है क्योंकि व्यक्तिगत डिलीवरी वायरस से सुरक्षित नही है। चीन और संयुक्तराज्य अमेरिका जैसे देशों ने संपर्कर हित डिलीवरी सेवाएं शुरू की हैं जहां ग्राहकद्वारा ऑर्डर किया गया सामान विशिष्ट और ग्राहकद्वारा स्वयं अपने लिए चुनने के बजाय चयन किए स्थानोंपर छोड़ दिया जाता है। लेकिन भारत में यह व्यवस्था अभी नहीं हो पाई है।

3. प्रौद्योगिकी ने डिजिटल और संपर्क रहित भुगतान को गति दी है।

कोरोना वायरस को एक संक्रामक बीमारी माना जाता है। वायरसस तहों पर 24 घंटे से अधिक समय तक रह सकता है; इस प्रकार, जो लोग संक्रमित नहींहैं, उन में कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए नकद के माध्यम से भुगतान कोह तो त्साहित किया जाता है।

प्रौद्योगिकी में प्रगति के परिणाम स्वरूप, विभिन्न देशों ने किसी भी सेवा के भुगतान के लिए सॉफ्टमनी या संपर्करहित भुगतान का उपयोग किया है। चीन, संयुक्तराज्य अमेरिका और दक्षिण कोरिया के कई बैंकों ने बाजार में प्रचलन से पहले बैंक नोटों को दूषित न करने के लिए विभिन्न तरीकों को शुरू किया है। ग्राहकों की शारीरिक उलझन के बिना प्रभावी ढंग से वस्तुओं और सेवा ओं की ऑनलाइन खरीद और विपणन की अनुमति देने के लिए विभिन्न प्लेटफार्मों को डिज़ाइन किया गया इसके अलावा, इसने उच्चगति के इंटरनेट और बेहतर मदद उपकरणों की उपलब्धता के कारण उपयोगिता भुगतान और प्रोत्साहन निधि के आवंटन को तेज कर दिया है भारत में भी प्रौद्योगिकी ने डिजिटल और संपर्क रहित भुगतान को वास्तव में गति दी है प्रति व्यक्ति सुरक्षा की दृष्टि से संपर्क रहित भुगतान के लिए डिजिटल तकनीकी का उपयोग करना सीख रहा है।

4. टेलीहेल्थ

उन्नततकनीक ने टेलीहेल्थ औरकोरोनावायरस के रोगियों के लिए स्वास्थ्य सेवा के प्रशासनमेंसुधारकियाहै। टेलीहेल्थ COVID–19 के प्रसारकोरोकनेऔररोगियोंकोआवश्यक प्राथमिक देखभाल प्रदान करने के लिए प्रौद्योगिकी द्वारा संभव बनाया गया एक प्रभावी तरीका है।

डॉक्टर अपने सेल फोन, कंप्यूटर या लैपटॉप का उपयोग करके चौट बॉक्स या वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से दिए गए विवरण के माध्यम से रोगियों का निदान कर सकते हैं और वास्तविक समय मेंदिशा–निर्देश दे सकते हैं कि क्या किया जाना चाहिए या क्या रोका जाना चाहिए। स्वास्थ्य सेवा प्रशासन द्वारा टेलीहेल्थ को अपनाना चिकित्स कों, रोगियों और स्वास्थ्य प्रणालियों के बीच कीखाई को आसानी से पाट रहा है, जिस से सभी को, विशेष रूप से रोग सूचक रोगियों को, अपने घर के आराम से अपने डॉक्टरों के साथ आभा सी चौनलों के माध्यम से बातचीत करने में सक्षम बनाया जा रहा है, जिस से बड़े पैमाने पर आबादी और फ्रंटलाइन पर चिकित्सा कर्मचारियों में वायरस के प्रसारको कम करने में मदत मिलती है। 13 आज कल, सभीस्वास्थ्य सेवाचिकित्सपासरोगी की निगरानी और ऑनलाइन देखभाल के लिए रिमोट डिवाइस हैं। ये रिमोट नेटवर्क सक्रिय रूप से अन्य स्वास्थ्य सेवा संगठनों को व्याख्या के लिए डेटा कैप्चर और सबमिट कर रहे हैं। यह टेलीमेडिसिन में एक महत्वपूर्ण कदम है जब आप घर पर रहने के बावजूद अपने डॉक्टर को नए स्वास्थ्य अपडेट जल्दी से दे सकते हैं

5. ऑनलाइन शिक्षा बनाम पारंपरिक शिक्षा और गुणवत्तापूर्ण आउटपुट

लॉकडाउन के कारण दुनियाभर में काम करने और सीखने के दूरस्थ तरीके का युग शुरू हुआ। हालांकि यह संक्रमण की रोक थाम और COVID–19 के आगे प्रसार में एक प्रभावी रणनीतिथी, लेकिन चिकित्सा शिक्षा प्रणाली में इसके अपने फायदे और नुकसानथे।

शिक्षा का ऑनलाइन तरीका कई लाभप्रदान करता है, यह गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक संसाधनों तक पहुँचको व्यापक बनाता है, छात्रोंद्वारा संसाधनों का उपयोग कभी भी किया जा सकता है, बेहतर शिक्षण परिणामप्राप्ति, व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव, और किसी भी कॉलेज–आधारित सुविधा ओं का उपयोग करने की आवश्यकता को कम करता है।

हालाँकि शिक्षा के ऑनलाइन मॉडल को अक्सर ऑफ.लाइन या पारंपरिक शिक्षा के तरीकों से बेहतर माना जाता है, फिरभी इस बात का कोई सबूत नहीं है कि ऑनलाइन मोड पारंपरिक मोड से बेहतर है। इसके अलावा, ऑनलाइन सीखने में छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए तत्काल प्रतिक्रिया की कमी हो सकती है, जिस से संतुष्टिदर और प्रदर्शन से समझौता होता है।

यह भीकहागयाहैकिशिक्षण के पारंपरिक तरीके में अधिक जीवंत सत्र, आमने–सामने की बातचीत, शिक्षक और छात्रों दोनों के लिए नवीन प्रश्न और उत्तर सत्रों के साथ तत्काल प्रतिक्रिया होती है। कुछ शोधकर्ता ओं ने यह भी कहा है कि शिक्षण का पारंपरिक तरीका छात्रों को सामाजिक संपर्क करने और समूह–आधारित सीखने को बढ़ाने की भी अनुमति देता है जो अक्सर वेब आधारित या प्रौद्योगिकी आधारित सीखने की तुलना में अधिक उत्पादक होता है।

वर्तमान परिदृश्य में, ऑनलाइन शिक्षण पद्धति से उत्पन्न होने वाला एक बड़ा खतरानिष्क्रिय व्यवहार और सामाजिक संपर्क की कमी है, जिसके कारण अधिक समय एकाकीपन में व्यतीत करना पड़ता है। हालाँकि, शारीरिक गतिविधि दिशा–निर्देशों के उचित कार्यान्वयन और स्वस्थ और रोगग्रस्त आबादी के बीच स्क्रीन समय में एक साथ कमी लाकर इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है।

6. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोगः

कई उद्योगों ने मानव संसाधनों पर निर्भरता कम करने के लिए ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को अपनाया है।

7. साइबरसुरक्षा का महत्वः

डिजिटल कार्यों और ऑनलाइन ट्रांजैक्शंस में वृद्धि के कारण साइबर सुरक्षा की आवश्यकता भी बढ़ी है। जितनी डिजिटल कार्य होते है साइबर ठगी के शिकार भी बहुत लोग होते है जिनके लिए जन जागरूकता बहुत ही जरूरी है। कंपनियों ने अपने साइबर सुरक्षा प्रोटोकॉल को मजबूत किया और डेटा सुरक्षा के लिए उन्नत तकनीकों को अपनाया।

8. वर्चुअलइ वेंट्स और एंटरटेनमेंटः

वर्चुअल कॉन्सट्र्स, ऑनलाइन गेमिंग, और स्ट्रीमिंग सेवा ओं का महत्व बढ़ा है, जिस से इस क्षेत्र में नए व्यवसायिक अवसर उत्पन्न हुए हैं। वर्चुअल क्लास, मीटिंग विभिन्न ऐप्स के द्वारा किए जाते है जिनको सीखना भी अनिवार्य हो गया है।

9. ई–कॉमर्स और ऑनलाइन शॉपिंग

ऑनलाइन खरीदारीः

लॉकडाउन और सामाजिक दूरी के नियमों के कारण, लोग ऑनलाइन खरीदारी की ओर अधिक रुख करने लगे। इससे अमेज़न, फ्लिपकार्ट जैसी ई–कॉमर्स कंपनियों की बिक्री में भारी उछाल आया है, लोग भीड़ में जाने से बचते है जिसके कारण ऑनलाइन शॉपिंग ऑनलाइन खरीदारी का रिवाज लोगों में बहुत बढ़ गया है लोग घर बैठे ही अपने घर के सामान, अनाज, सब्जियां, कपड़े,जूते, होमडेकोरेशन, सभी मंगा सकते है।

वर्तमान समीक्षा से यह स्पष्ट है कि महामारी के दौरान निष्क्रिय आबादी के बीच स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने में प्रौद्योगि की और सोशल मीडिया–आधारित हस्तक्षेप एक प्रभावी उपकरण हो सकते हैं।

प्रौद्योगि की–आधारित उपकरण और सोशलमीडिया प्लेटफ़ॉर्म कोविड 19 युग के दौरान आबादी के बीच प्राथमिक और द्वितीय करो कथाम को वितरित करने के लिए जीवन शैली हस्तक्षेपों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

इसके अलावा, वर्तमान में ये तकनीकी और इंटरनेट मोड न केवल सुरक्षित हैं, बल्कि महामारी के दौरान सामाजिक दूरी और अलगाव को बनाए रखते हुए स्वास्थ्य देखभाल हस्तक्षेप प्रदान करने के लिए एक प्रभावी रणनीति भी बने है।

यह समझ नाभी महत्वपूर्ण है कि प्रौद्योगिकी–आधारित हस्तक्षेप को पीड़ित आबादी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए एक निश्चित हद तक स्व–निगरानी, व्यक्तिगत प्रतिक्रिया के साथव्यक्तिगत रूप से तैयार किया जाना चाहिए।

हालाँकि, प्रौद्योगिकी–आधारित हस्तक्षेप कार्यक्रमों के अवांछनीय पहलू को भी नज़र अंदाज़ नहीं किया जा सकता है और इस से जुड़े संभावित खतरों या लत को रोकने के लिए हस्तक्षेप के रूप में इस के उपयोग के लिए दिशा–निर्देशों की सिफारिश करना या बनाना बहुत ज़रूरी है।

निष्कर्ष:

कोरोना वायरस बीमारी के बढ़ने से धीरे–धीरे लोगों के जीवन में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के बदलाव आए हैं। इस समय विभिन्न डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के इस्तेमाल तक सामान्य जन पहुंच को जरूरी माना जा रहा है।कोविड–19 बीमारी के मौजूदा प्रभावों का जवाबदेने के लिए प्रौद्योगिकी में उन्नति की मांग जरूरी है। कहा भी गया है आवश्यकताही आविष्कार की जननीहै यह स्पष्ट है कि जहां तक संबंधित है, मौजूदा आपातकाल को रोकने के लिए नई तकनी की विधियों के तेजी से इस्तेमाल ने एक व्यापक डिजिटल क्रांतिको जन्म दिया है। भले ही डिजिटल क्रांति का अस्तित्व नया न हो, लेकिन मौजूदा आपदा ने जरूरी मुद्दों को संबोधित करने का एक नया आयाम जोड़ा है। सामाजिक दूरी, बुनियादी स्वच्छता के रख रखा व और यात्रा प्रतिबंधों के प्रति सरकार और विश्वस्वास्थ्य संगठनद्वारा लागू की गई नीतियों ने व्यक्तियोंको अपने स्वास्थ्य के लिए जिम्मेदार होना सिखाया है। इसके अलावा, प्रौद्योगिकी की उन्नति ने इस आपदा के समय में कई अच्छे अवसर उत्पन्न किए है जो लोगों को नया सीखने को मजबूरकर रहा है।

संदर्भ:

1. इंटरनेट
2. नंदकुमार गिरीश एवं दीक्षित स्नेहिल (2021) COVID–19 महामारी के दौरान सूचना प्रौद्योगि की का उपयोग करके स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देना।
3. एस राम दुरई एवं अरविंद सिंग (2020) कोविड–19 के बाद की दुनियाः स्वास्थ्य और तकनीक के क्षेत्र में भारत के लिए अनेक अवसर।
4. निशांत रेणु (2021) कोविड–19 के युग में तकनी की उन्नति